समीक्षक-डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री
बिहार

नदी, ज़मीन और संबंधों का निर्वाह करती हुई

गंडक की बेटी डॉ.अनीता सिंह की तीन सौ अठहत्तर पेज में फैली एक सौ सात कविताओं का संग्रह है,जो कवयित्री के नदी के बहाने पारिवारिक जुड़ाव को भी पूरी आत्मीयता से दिखलाता है.

गंडक गंगा की एक सहायक और बिहार की सबसे लंबी नदी है. यह अलग बात है कि इस नदी की भी कई सहायक नदियाँ हैं. कवयित्री लगभग वहीं की हैं जहाँ से गंडक का उद्गम माना जाता है.ज़ाहिर है उन्होंने इस गंडक के मातृ रूप को देखा ही नहीं है उसी के तट पर अपनी परवरिश भी पाई है. इसलिए गंडक उनकी कविताओं में पूरी तरह जीवंत हो जाती है.

हम जानते हैं कि दुनिया की सारी सभ्यताएँ किसी न किसी नदी के किनारे विकसित हुई. जब तक हम इसके साथ रहे,ज़िन्दगी बेफिक्र स्वस्थ और खूबसूरत थी.हमने जैसे ही प्रकृति का दोहन करना शुरू किया, हमें उसका रौद्र रूप भी देखना पड़ा.पानी की उपलब्धता व्यापार,भोजन सभी हमें नदी के तट पर मिल जाता था, इसलिए इसे नदी घाटी सभ्यता के नाम से भी पुकारा जाता था.

संग्रह में मेरा गाँव और ठाकुरबाड़ी के नाम से कई कविताएँ हैं. जिसमें गाँव का पाठशाला, पीपल का पेड़, काली माई की मंदिर, नदी कुआँ,पोखर,आम,जामुन कटहल सब कुछ मौजूद है. ठाकुरबारी कविता में पूजा स्तुति कीर्तन सबका जीवंत दृश्य है.साथ ही मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने की जुगत भी है.यह वह ठाकुरबाड़ी नहीं है, जहाँ नस्लें देखी जाती है –

ठाकुरबाड़ी ने
नहीं माना ऊंच–नीच
राम के दरबार में
सब थे बराबर...

पुस्तक में माँ पर भी कई कविताएँ हैं. उनके पास वह शब्दों का जादू है कि माँ की पूरी अहमियत को तीन पंक्तियों में रख देती हैं –

अपनी ज़रूरतों के लिए सब
ढूंढते थे माँ को
सबकी जरूरत थी माँ...

उन्होंने इस संग्रह में अपने परिवार के लोगों को भी समेटा है, जहाँ उषा दीदी, नरेश भैया, सब मौजूद हैं. जिनसे परिचय भी मिलता है, और उनसे हमारी संवेदना भी जगती है..

ठीक इसी तरह मनाए जाने वाले पर्व त्योहार दिवाली,भैया दूज,छठ आदि पर रचनाएँ मौजूद हैं. इन कविताओं में जो स्त्री है वह बहुत प्रबल रूप में हमारे सामने आती है.कविता में पहली बार स्त्रियाँ अपना समाधान गीतों में तलाशती हैं–

पा लेती थीं
हर समाधान
अपने गीतों में
गीत गाते हुए
मुखर हो उठता था
इनका मौन...

असल में गंडक की बेटी कविता पारिवारिक पृष्ठभूमि में अधिक लिखी गई है.इस कविता के विषय परिवार के लोग और सगे संबंधी हैं.ज़ाहिर है लेखिका के भले उनके साथ रिश्ते, खिंचाव और सहानुभूति हों,आम पाठकों को वह आकर्षित करने से रह जाता है, पर इतना तो सच है कि जो विषय आत्मकथा के हैं, वह पहली बार इस संपूर्णता के साथ किसी काव्य संग्रह के माध्यम से लाये गये है.

गंडक की बेटी
कवयित्री –डॉ. अनिता सिंह
वर्ष –2026,मूल्य –599,पृष्ठ –383
श्वेतवर्णा प्रकाशन, नयी दिल्ली

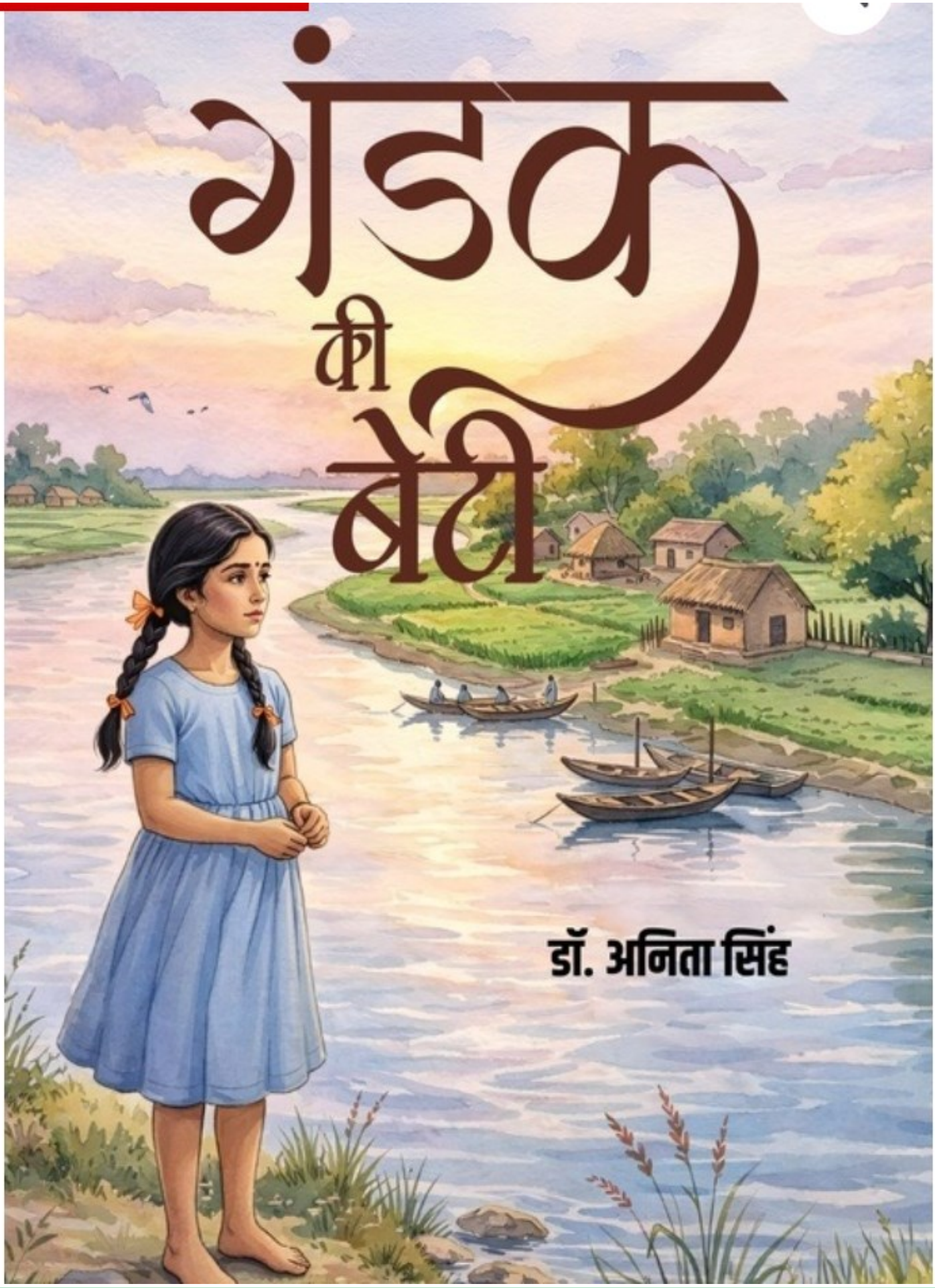

साहित्य रत्न वर्ष-4अंक-4 अगस्त-2026 ISSN:2583-8849